ब्राक मीडिया

डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय के मीडिया छात्रों का प्रायोगिक समाचार-पत्र

नई दिल्ली, सोमवार , 25 सितंबर 2024 | अंक 5 , पृष्ठ 1

सृजन ईवेंट

नई दिल्ली : डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज की कल्चरल सोसायटी सृजन और गांधी जी की पाठशाला के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस के ऊपर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का विषय वैश्विक परिदृश्य में हिंदी था। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. कंचन भारद्वाज उपस्थित रहीं।

डॉ. भारद्वाज ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी का क्षेत्र बहुत व्यापक है। हिंदी में स्त्री विमर्श पर बहुत बातें होती हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि हिंदी लेखन में महिलाओं की उतनी भागीदारी नहीं है, इसलिए हमें कोशिश करनी चाहिए कि महिलाओं को मुख्य धारा में लाया जाए। इसके बाद उन्होंने अपनी कुछ कविताएं भी विद्यार्थियों को सुनाई। इसके अलावा विद्यार्थियों ने भी अपनी कुछ रचनाएं कंचन जी के सामने प्रस्तुत की।

कार्यकम का संचालन अरिमर्दन ने किया। कार्यक्रम का मार्गदर्शन प्रो जया वर्मा , प्रो चित्रा रानी, प्रो शशि रानी और डॉ सुभाष गौतम के सानिध्य में हुआ।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मीडिया क्षेत्र में रोजगार संभावना बढ़ाने वाला साबित होगा

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय में हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार और हिन्दी विभाग द्वारा कृत्रिम बुद्धिमता के दौर में मीडिया विषय पर नवागंतुक छात्रों के लिए मार्गदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बतौर अध्यक्ष डी डी न्यूज के सीनियर कन्सल्टिंग एडिटर व एंकर अशोक श्रीवास्तव, बतौर वक्ता बीबीसी न्यूज की सीनियर ब्रॉडकास्ट जर्नलिस्ट सुशीला सिंह और आजतक न्यूज की सहायक संपादक हिमानी दीवान शामिल रहे।

ओरीएन्टेशन प्रोग्राम मे मंचासीन अतिथिगण और प्राध्यापक

मार्गदर्शन कार्यक्रम में विषय प्रस्ताव प्रो. शशि रानी ने रखा। एपीजे अब्दुल कलाम के कथन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा एक ऐसा शक्तिशाली हथियार है, जिसका प्रयोग दुनिया को बदलने में किया जा सकता है। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता(एआई) के कई रुपों और कार्यों से श्रोताओं को अवगत कराया।

सीनियर ब्रॉडकास्ट जर्नलिस्ट सुशीला सिंह ने मीडिया में इंटर्नशिप और भाषा पर अच्छी पकड़ को महत्वपूर्ण बताया और मीडिया में प्रयुक्त टेक्नोलॉजी के विकास की चर्चा की। उन्होंने एआई के द्वारा सृजित कंटेंट पर भरोसा करने के बजाय उसके डबल चेक पर जोर दिया। साथ ही, एआई की चुनौतियों को स्वीकार करने और उसमें अवसर तलाशने पर बल दिया।

आजतक न्यूज की सहायक संपादक हिमानी दीवान ने एआई के तमाम पक्षों को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मीडिया संस्थान में यदि एआई का असावधानी से प्रयोग किया जाएगा तो बड़े खतरों का सामना करना पड़ सकता है। कृत्रिम बुद्धिमता के प्रयोग से इंसान की सृजनात्मकता खत्म हो रही है। इससे हमें डरने की जरुरत नहीं है बल्कि इसे सीखने की आवश्यकता है।

डीडी न्यूज एंकर अशोक श्रीवास्तव ने बताया कि दुनिया हर पल बदल रही है। अगर आप इन बदलावों के अनुरुप ढ़लने के लिए तैयार नहीं हैं तो आपके रोजगार का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। भाषा पर आपकी पकड़ जितनी मजबूत होगी, उतने ही आप मीडिया क्षेत्र में रोजगार के अवसर पा सकेंगे। आपको कंटेंट क्रिएशन पर काम करना चाहिए न कि एआई के कंटेंट की कॉपी पर भरोसा करना चाहिए। आज कंटेंट क्रिएटर के लिए अवसर की अपार संभावनाएँ हैं। उन्होंने मार्गदर्शन कार्यक्रम में छात्रों द्वारा पूछे गये सवालों का जबाव देते हुए कहा कि हमें अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, लेकिन हिन्दी के शब्दों के महत्व को भी नहीं भूलना चाहिए। जहाँ तक संभव हो सके, हिन्दी के शब्दों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है क्योंकि अपनी मातृभाषा को बचाना हमारी जिम्मेदारी है।

मार्गदर्शन कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती की वंदना और दीप प्रज्ज्वल के साथ हुआ। अतिथियों का स्वागत तुलसी पौध और शॉल भेंट कर किया गया। स्वागत वक्तव्य प्रो. बिजेन्द्र कुमार द्वारा दिया गया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. चित्रा रानी द्वारा की गई। मंच संचालन राकेश कुमार द्वारा किया गया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज अंबेडकर कॉलेज के रोजगार मेले में 117 विद्यार्थियों को मिला रोजगार

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ भीमराव अंबेडकर कॉलेज में समाज कार्य विभाग और समान अवसर सेल द्वारा समावेशी रोजगार मेला 2024 का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रो. राज किशोर शर्मा, विशिष्ट अतिथि श्री शिवम देशपांडे व सतीश के, कॉलेज प्राचार्य प्रो सदानंद प्रसाद, कार्यक्रम की संयोजिका डॉ अंजली सुमन और समाज कार्य विभाग की प्रभारी व समन्वयक डॉ. तुष्टि भारद्वाज ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सामाज कार्य विभाग ने कॉलेज को सामाजिक संसाधनों से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्होंने रोजगार प्रदाता कंपनियों और अभ्यर्थियों का स्वागत किया।

समावेशी रोजगारे मेला 2024

मुख्य अतिथि प्रो. राज किशोर शर्मा ने कहा कि हर चुनौती हमें नया अनुभव देती है और हर अनुभव हमें मजबूत बनाता है। दुनियाँ हमारा साथ तभी देगी जब हमें खुद पर भरोसा होगा । आप आगे बढ़िए, खुद पर भरोसा रखिए और ऐसे मौके का पूरा फायदा उठाइए।

श्री सतीश के ने कहा कि समर्थनम ट्रस्ट द्वारा शुरुआत में दस बच्चों को पढ़ाया जाता था और अब उन्हें उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप दिया जाने लगा है। एमको और समर्थनम ट्रस्ट द्वारा चयनित दिव्यांगों को न्यूमोशन की आधुनिक टेक्नोलॉजी से संलग्न व्हीलचेयर का वितरण किया गया।

बार्क्लेस और समर्थनम ट्रस्ट ऑफ़ फिजिकली डिसेबल्ड पर्सन द्वारा स्नातक उत्तीर्ण दिव्यांगजनों को 23 कंपनियों द्वारा 117 अभ्यर्थियों कंपनियों द्वारा रोजगार प्रदान किया गया।

नागरी लिपि को सरकार से संपर्क लिपि का दर्जा देने की अपील

नई दिल्ली : डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय में नागरी लिपि परिषद एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आचार्य विनोबा भावे की जयंती के अवसर पर नागरी लिपि पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद, नागरी लिपि परिषद के अध्यक्ष प्रो.प्रेमचंद पातंजलि, हिन्दी विभाग की प्रमुख प्रो. चित्रा रानी, इंग्लैंड में वातायन की संस्थापक दिव्या माथुर और नीदरलैंड में हिंदी सेवी रामा तक्षक ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए नागरी लिपि परिषद के महासचिव हरि सिंह पाल ने कहा कि नागरी लिपि दुनिया की सबसे ज्यादा वैज्ञानिक लिपि है- जैसे बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। नागरी लिपि को सीखने और जानने वाले की बुद्धिमत्ता बढ़ती है क्योंकि यह एकमात्र लिपि है जिसके लिखने में चौतरफा मात्रा का प्रयोग किया जाता है। नागरी लिपि परिषद् का यह प्रयास है कि देवनागरी लिपि को संपर्क लिपि के रूप में सरकार द्वारा मान्यता प्रदान की जाए। कार्यशाला में राजभाषा अधिकारी श्रवण कुमार ने बताया कि नागरी लिपि सबसे पुरानी लिपियों में से एक है।

अतिथि का स्वागत

शेष पृष्ठ सं. 2 पर >

अंबेडकर कॉलेज में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना के तहत यौन उत्पीड़न रोकथाम को लेकर हुआ वर्कशॉप का आयोजन

नई दिल्ली : 12 सितंबर 2024 को दिल्ली यूनिवर्सिटी के डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' स्कीम के तहत यौन उत्पीड़न, डोमेस्टिक वायलेंस और आईटीपीए अधिनियम पर एक दिन की वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में अतिथि के तौर पर उत्तर पूर्वी दिल्ली जिला मजिस्ट्रेट (IAS श्रीमती वेदिता रेड्डी), CAW सेल ACP (श्रीमती प्रवीण कुमारी), दिल्ली पुलिस में (SI किरण सेठी), सखी कार्यक्रमों के लिए जिला नोडल अधिकारी (श्री R.K मीणा) और (डॉक्टर स्वन्या प्रभा) उपस्थित हुई साथी कार्यक्रम में प्रो. शशि रानी भी मौजूद रहीं। इस कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए डीएम वेदिता रेड्डी ने बताया कि यह सखी केंद्र जिला अधिकारी के अधीन है जो महिलाओं और बालिकाओं को विमर्श, कानूनी सुरक्षा की सहायता देता है साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को महिलाओं और बच्चों के लिए जागरूकता कार्यक्रम में जुड़ने का प्रस्ताव दिया जिस पर उनका कहना था कि कई युवा सखी केंद्र के साथ जुड़कर MCD, सैनिटेशन कार्यक्रमों में मदद करते हैं। डीएम वेदिका रेड्डी ने आगे कहा कि हमें बेटियों को पढ़ना ही नहीं बल्कि काम के लिए सुरक्षित स्थान भी देना है सखी केंद्र में हम ने सारी स्कीमों को एक जगह लाने की कोशिश की है। हम चाहते हैं हमारे NGO हर इलाके में जाएं और जो उनकी ज़रूरतें हैं वह जल्द से जल्द पूरी करें

IAS वेदिता रेड्डी का सम्मान

मंच को संबोधित करते हुए CAW सेल ACP प्रवीण कुमारी ने कहा यहां जो मामले आते हैं वह ज्यादातर मुस्लिम महिलाओं के आते हैं उन्हें मारा जाता है पति उन्हें महीने का खर्च नहीं देते और बताया की हमारी संस्था की सहायता से 100 में से 90 केस रिजॉल्व हो जाते हैं। इसके बाद कॉलेज प्रोफेसर डॉ शशि रानी ने विचार साझा करते हुए कहा 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' यानी जहां स्त्रियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं आगे उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल होना चाहिए सेक्सुअल हैरेसमेंट से महिलाओं का मनोबल टूटता है इसीलिए ऐसा माहौल बनाएं जिससे महिलाएँ सुरक्षित महसूस करें प्रोफेसर शशि रानी ने कहा कि हर काम के लिए महिलाओं का उत्पीड़न होता है नौकरी हो, ऑफिस में काम के दौरान या फिर पब्लिक प्लेस पर लेकिन उन्होंने यह भी कहा कई बार महिलाएं पुरुषों पर गलत आरोप लगाती हैं इसीलिए उन्हें पता होना चाहिए कि गलत आरोप लगाने पर उन पर भी कार्यवाही हो सकती है। जिसके बाद SI किरण सेठी ने बताया कि उन्होंने 10 लाख लड़कियों को सेल्फ डिफेंस सिखाया और पुरुषों को भी ट्रेनिंग दी है। उन्होंने बताया कि वह दिल्ली में (रेड लाइट एरिया) जीबी रोड पर इंचार्ज है जहाँ वह नाबालिक बच्चियों को बेचे जाने से बचाती हैं साथ ही सेक्स वर्कर्स को भी दूसरे रोजगार दिलाने में मदद करती हैं जैसे दिए बनाना, गार्ड की नौकरी आदि। इसके बाद उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी शिकायत दर्ज करने के लिए हेल्पलाइन नंबर बताएं जिसमें 112 पुलिस के लिए, 1930 ऑनलाइन क्राइम के लिए बताया और कहा अपराधों को बढ़ाओ मत रोको। पहले दिन ही शिकायत करो। इसके बाद डॉक्टर प्रभा ने अपने विचार साझा किया और सखी गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

जीवन का कोई नक्शा नहीं , इसे आपको स्वयं गढ़ना होगा : - प्रोफेसर अनु कपूर

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ भीम राव अम्बेडकर कॉलेज के भूगोल अध्ययन विभाग द्वारा भूगोल विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात भूगोलवेत्ता प्रो. अनु कपूर उपस्थित रहीं। कॉलेज प्राचार्य प्रो सदा नंद प्रसाद भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इसके बाद मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया।

मुख्य अतिथि

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की शुरूआत करते हुए भूगोल विभाग की समन्वयक डॉ तूलिका सनाढ्य ने कहा कि हमारे वेदों में पंचमहाभूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का वर्णन है जो कि भूगोल के अभिन्न अंग है। उन्होंने अपने वक्तव्य में एक उदाहरण देते हुए कहा कि बच्चे के जन्म लेने के बाद से ही उसके ऊपर भौगोलिक कारकों का असर पड़ना शुरू हो जाता है। इसलिए भूगोल का क्षेत्र सीमित न होकर बहुत व्यापक है।

मुख्य अतिथि प्रो अनु ने अपने उद्बोधन में कहा कि उनका जीवन पढ़ने-पढ़ाने में ही बीता है। उन्होंने अपने दौर की परेशानियों से भी अवगत कराते हुए कहा कि कैसे उनके पास आज के दौर की तरह इंटरनेट, चैटजीपीटी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उपलब्ध नहीं थे। लेकिन आज के समय में ऐसा नहीं है। आपके हाथों में ही सारी दुनिया है । "Geography of Geographers" विषय पर बोलते हुए उन्होंने भूगोल में विविध सम्भावनाओं पर बल दिया। जैसे आपदा प्रबंधन से लेकर नीति निर्माण में भी किस प्रकार भूगोलवेत्ता की ज़रूरत पड़ती है तथा कैसे उन्होंने बधिरजनों के लिए मैप बनाया। विद्यार्थियों के कैरियर संबंधी प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि भारत में हम सभी आपदाओं के बीच में जी रहे हैं। इसलिए आप जीआईएस और रिमोट सेंसिंग में करियर बना सकते हैं। मैप्स ऑफ़ इंडिया जैसे ऑनलाइन स्रोत छात्रों को इंटर्नशिप प्रदान करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत में जनसंख्या वृद्धि ज्यादा तेज़ी से हो रही है। इसलिए जनसांख्यिकी भूगोल का भी आने वाले दिनों में विस्तार होगा।

कार्यक्रम के अंत में प्रो कपूर ने भूगोल विभाग को दिल्ली विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा विमोचित अपनी क़िताब "ऑरा: यूनिवर्सिटी ऑफ़ दिल्ली @100" भेंट किया। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. ताराशंकर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ मोनिका अहलावत ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

इसकी उत्पत्ति ब्रह्म लिपि से हुई है और इसका मानकीकरण गुप्त काल में हुआ। कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में नीदरलैंड से पधारे रामा तक्षक ने कहा कि भारत का विश्व पटल पर पहचान वेद-पुराण और ऋषि-मुनियों के कारण है। देवनागरी लिपि में लिखा हरेक शब्द महामंत्र है। उदाहरण के साथ उन्होंने बताया कि जब कक्षा में प्राध्यापक प्रवेश करते हैं तो उनके स्वागत में खड़े होने वाले विद्यार्थियों के लिए उनके द्वारा कहा वाक्य- बैठ जाओ महामंत्र की तरह है। बैठ शब्द में 'ठ' की लिपि घड़े के आकार की तरह का होता है जो इस भाव को समाहित करता है कि विद्यार्थी कक्षा में विद्यार्जन घड़े की तरह करें, जैसे घड़े में सबकुछ समाहित हो जाता है जबकि अंग्रेजी के सीट शब्द में वह भाव नहीं आता है।

इंग्लैंड में हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार हेतु वातायन संस्था की संस्थापिका दिव्या माथुर ने कहा कि हिन्दी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को एआई एवं आईटी में कुशलता हासिल करने के साथ-साथ हिन्दी भाषा पर अच्छी पकड़ बनाने से रोजगार की संभावनाएँ प्रबल हो जाती है।

लिपि परिषद के अध्यक्ष डॉ प्रेमचंद पातंजलि ने छात्रों से नागरी लिपि परिषद से जुड़ने और हिन्दी को समृद्ध करने में योगदान देने की अपील की।

कार्यशाला के दौरान मुख्य अतिथियों ने पत्रिका न्यूयार्क से प्रकाशित सौरभ और लंदन से प्रकाशित नारी संगम का विमोचन किया।

कार्यशाला में स्वागत भाषण प्रो. चित्रा रानी के द्वारा किया जबकि प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के छात्र, शिक्षक और ऑनलाइन माध्यम से देश-विदेश से सैंकड़ों विद्वतजन शामिल रहे।

भावनात्मक दर्द से मुक्त कराकर रोकी जा सकती है आत्महत्या: प्राचार्य

नई दिल्ली : डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज में आत्महत्या रोकथाम पर कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद ने कहा कि मानसिक और भावनात्मक संघर्षों, जैसे कि दिल टूटना और विश्वासघात आदि के कारण पीड़ितों के अंदर आत्महत्या करने की प्रवृत्ति जागृत होती है। पीड़ित पक्ष में आत्महत्या के पीछे भावनात्मक दर्द से मुक्ति की चाह होती है।

कार्यशाला में छात्रों से संवाद करते हुए पूछा गया कि यदि उनके दोस्त द्वारा उन्हें यह संदेश भेजा गया हो कि अगर आप मुझे फिर कभी नहीं देख पाएँगे तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी? छात्रों की प्रतिक्रियाओं पर मनोविज्ञान के विशेषज्ञों ने अपनी राय रखी और भावनात्मक कमजोरियों को उजागर कर उसे दूर करने के उपाय बताए। अगले सत्र में व्यायाम और प्राणायाम कराया गया जिससे प्रतिभागियों को शारीरिक और मानसिक तनाव से राहत मिली। इस सत्र में, भावनाओं को छिपाने और दबाने के मानसिक परिणामों पर भी चर्चा की गई। इसके बाद सुसाइड प्रिवेंशन मॉडल 'सीएएआरई' की व्याख्या की गई जिसमें कनेक्ट करना, दर्द को स्वीकारना, पूछना और मूल्यांकन करना, सहानुभूति से जवाब देना और सुरक्षा योजना को प्रोत्साहित करना शामिल थे।कार्यशाला के दौरान छात्रों द्वारा उठाये गये प्रश्न और शंकाओं का निवारण वक्ताओं ने समन्वित रूप से किया।

आत्महत्या रोकथाम कार्यशाल

डॉ. तूलिका शांडिल्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।। इस कार्यशाला में अध्यक्ष हर्षिता पुरोहित, उपाध्यक्ष नेहा मंडल, डॉ तूलिका शांडिल्य सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

फेक न्यूज़ की पहचान कैसे करें और रोज़ हमारे सामने खबरें आती हैं उस पर विश्वास कैसे करें ?

नई दिल्ली : अगर आपको कोई भी वेबसाइट ठीक नहीं लग रही या फिर अशांत करने वाली लग रही है तो आपको वही रुक जाना चाहिए। क्योंकि आप भी हो सकते है फर्ज़ी खबरों का शिकार। लोग आज के समय मे डिजिटल मीडिया का सबसे ज्यादा उपयोग करते है।

अब सबसे आसान तरीका है फेक न्यूज़ को पहचानने का उसका URL

आप किसी भी वेबसाइट पर खबरों को पढ़ रहे है तो उसका URL चेक कीजिए। क्योंकि फर्ज़ी खबरों का URL बदल हुआ होता है। जैसे कि रॉकस्टार 123।

लेकिन वही दूसरी ओर देखें तो आप किसी भी गवर्नमेंट या ऑफिशियल वेबसाइट पर चेक आउट करते है तो उसका URL .Govt.com या फिर.com इत्यादि होता हैं।

Q : वर्तमान समय में इंस्टाग्राम पर न्यूज़ या मीम्स पढ़ने का प्रचलन है और सबसे बड़ी समस्या है किसका उत्तरदाई कौन है ।और किस तरह लोग खबरों को समझते है ?

सबसे पहले हमे मीडिया साक्षरता को समझना होगा।

लगभग सभी लोग इंस्टाग्राम, फेसबुक जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। और इन्ही प्लेटफॉर्म पर लोग खबरों को मीम्स के रूप में देखते हैं। जिसे लोग फ़र्ज़ी खबरों का शिकार भी हो जाते हैं।

लेकिन साथ ही देखा जाये तो हर इंफोर्मेशन न्यूज़ नही होती हैं और साथ ही किसी भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर दिखने वाली खबर न्यूज नही होतीं है जैसे आर्टिकल और न्यूज़ में काफी अंतर होता है।

Q : फैक्ट चेकिंग के टूल्स के बारे में जानना बेहद जरूरी है ?

वर्तमान समय में कई टूल्स है लेकिन एक ऐसा टूल रिकमेंड किया जाता है। जो कि आपकी वीडियो, फोटो, समाचार सभी के बारे में सही जानकारी बता सके । इसी के साथ कई ऐसे टूल्स है जैसे कि यूट्यूब डाटा विवर भी एक टूल है लेकिन आप अलग-अलग सर्च इंजन का प्रयोग कर सकते हैं क्यूंकी आप केवल गूगल पर ही नहीं निर्भर रह सकते हैं।

मीडिया साक्षरता **पर वर्कशॉप**

Q : अब जानते हैं फेक न्यूज़ के पीछे का एजेंडा क्या होता है इसके पीछे कौन लोग होते है ?

देखा जाये तो एजेंडा अलग-अलग प्रकार का होता है और यहां लोग सिर्फ पैसे कमाने के लिए क्लिप चलाते हैं। जैसे एक वीडियो में इंटरेस्टिंग हैडलाइन के माध्यम से लोगों को आकर्षित करते हैं। उसे देखना पसंद करते हैं लेकिन वही कुछ लोगो का ये मानना है कि कुछ लोग इसे प्रोपेगेंडा के लिए भी इस्तेमाल करते हैं।

Q : आप सभी ने ध्यान दिया होगा कि अधिकतर खबरें पॉलिटिक्स या फिर हेल्थ इश्यू को लेकर ही फैलती है जैसा कि उसके नुकसान उसके तौर तरीके इत्यादि के बारे में ?

इस विषय पर भी हमें सबसे पहले मीडिया को जानने की आवश्यकता है क्योंकि जरूरी नहीं है कि यूट्यूब पर दिखाए जाने वाली वीडियो का कंटेन्ट सही हो । कुछ चीज हमारे शरीर के लिए नुकसानदायक हो सकती हैं लेकिन वही अगर हम बात करें कोरोना की तो सभी डॉक्टर ने कहा था कि सभी को विटामिन सी लेने से कोरोना जल्दी ठीक हो जाएगा । लेकिन यह सिर्फ एक हेल्थटिप थी

जरूरी नहीं है कि यूट्यूब के माध्यम से जो भी आपको वीडियो या कंटेंट दिखाया जा रहा है वो सही ही हो ।हमें किसी भी चैनल या वेबसाइट पर जाने से पहले उसे एक बार अच्छे से पढ़ लेना चाहिए और समझ भी लेना चाहिए।

Q : मीडिया की सबसे मुख्य बात ये होती है हम न्यूज़ कहां से पढ़ रहे हैं और किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि अधिकतर लोग केवल हैडलाइन या फिर पॉप को देखकर ही अपनी न्यूज़ को समझ लेते हैं ?

आज के समय मे आम जनता एक पैसिव ऑडिएंस हैं जो केवल एक्टिवली न्यूज़ कंज्यूम नहीं करते लेकिन वही अगर हम बात करें समाचार की तो हमे समाचार के लिए कोई एक स्रोत नहीं रखना चाहिए। अलग-अलग स्रोतों से समाचार को पढ़ना चाहिए केवल एक ही स्रोत पर ही हमें निर्भर रहने से मिस गाइडेंस भी हो सकती है । साथ ही केवल हैडलाइन ही नहीं बल्कि न्यूज़ को अच्छे तरीके से उसके कंटेंट को भी पढ़ना चाहिए

Q : आईटी सेल इसमें किस प्रकार अपनी भूमिका को निभाता हैं ?

देखा जाए तो आईटी सेल की इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । आज के समय में आईटी सेल का पॉलिटिक्स पार्टी से नेगेटिव कन्वर्सेशन हो गया है ऐसा नहीं है की आईडी सेल हमेशा नेगेटिव ही काम करता है लेकिन लोगों के मन में एक ऐसा विचार सब बैठ गया है कि आईटी सेल केवल नेगेटिव कार्य ही करता है

Q : मीडिया में AI का प्रयोग सबसे ज्यादा हो रहा है जहां पर दी फेक वीडियो और फेक न्यूज़ को बनाया जाता है ?

AI का इस्तेमाल करने से हमे AI को समझना होगा फिर उसका किसी तरह उपयोग करना है । लेकिन वही अगर हम बात करें टैक्स की तो टैक्स में भी प्लेगिरिज्म सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है जिससे फ़र्ज़ी न्यूज़ और चैट्स को बनाया जाता हैं।

Q : आखिरकार फैक्ट चेकिंग का अधिकार किसे होना चाहिए कुछ समय पहले ही फैक्ट चेकिंग मेकैनिज्म को सुप्रीम कोर्ट द्वारा रोक लगा दी गई थी?

देखा जाए तो फैक्ट चेकिंग का अधिकार सभी को होना चाहिए। ये जरूरी नहीं है कि फैक्ट चेकिंग का अधिकार किसी खास व्यक्ति को दिया जाए वैसे भी भारत एक डेमोक्रेटिक देश है जहां आप अपनी इच्छा अनुसार कोई भी कार्य कर सकते हैं ।

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार ,हिंदी विभाग मार्गदर्शन कार्यक्रम

प्रतियोगिता

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीम राव अंबेडकर महाविद्यालय में अन्तः महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का अयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में हिन्दी विभाग द्वारा आय़ोजित प्रतियोगिता का विषय था जाति जनगणना देश हित में हैं। इस प्रतियोगिता में पुरस्कारों की तीन श्रेणियाँ थीं जिसमें प्रथम पुरस्कार की राशि एक हजार, द्वितीय पुरस्कार की राशि आठ सौ रुपये और तृतीय पुरस्कार की राशि सात सौ रुपये की थी।

इस प्रतियोगिता के आयोजन मंडल में प्रभारी, हिन्दी विभाग चित्रा रानी, संयोजक प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी और प्रो.नीरव अडालजा शामिल थे जबकि निर्णायक मंण्डल में प्रो. तारा शंकर, प्रो. अतुल प्रताप शामिल रहे।

प्रतियोगिता में महाविद्यालय के समस्त विभागों के विद्यार्थियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और अपने वाक कौशल का प्रदर्शन किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने वालों में हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग के बच्चों की धूम रही। पुरस्कार के प्रथम विजेता अभिषेक श्रीवास्तव द्वितिय विजेता प्रगाति गुप्ता एवं तृतीय विजेता से रूपाली शर्मा रहे। ये तीनों ही हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के तृतीय वर्ष के विद्यार्थी हैं।

फिल्मों की मार्केटिंग और उनके निर्देशन से जुड़े पहलुओं पर चर्चा

नई दिल्ली : फिल्में आज हमारे समाज का एक हिस्सा बन चुकी है ये मनोरंजन के साथ साथ हमारे बेहतर भविष्य और आय का साधन भी बन चुका है। इन फिल्मों के मार्केटिंग और उनके निर्देशन संबंधी जानकारी के लिए हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम के छात्र संवाददाता अभिषेक राज द्विवेदी ने फिल्म निर्देशक विकाश नीरज सिंह से बातचीत की पेश है कुछ खास अंश

Q : फिल्मों के लिए प्रभावी मार्केटिंग रणनीति कैसे तैयार किया जाता है?

फिल्मों के मार्केटिंग की मुख्य रणनीति होती है रिवेन्यू कामना, जो दो भागों में होता है। पहला जिसमे मूवी में किसी ब्रांड से जुड़ी किसी वस्तु का उपयोग करना जिसका असर लंबे समय तक दर्शक पर रहता है। दूसरा जिसमे किसी बड़े सेलिब्रिटी से इसका प्रमोशन कराया जाता है।

Q : फिल्म ट्रेलर और पोस्टर का दर्शकों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

ट्रेलर सबसे आसान और प्रभावी तरीका होता है। फिल्म के अवधारणा और कहानी को समझने का जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव टारगेट ऑडियंस पर पड़ता है। फिल्म का पोस्टर कलाकारों के किरदारों का एक समायोजन होता है। जो फिल्म ने निभाए गए रोल पर आधारित होता है जिससे दर्शकों को आकर्षित किया जाता है।

Q : फिल्म की सफलता में डिजिटल मार्केटिंग की क्या भूमिका है?

डिजिटल मीडिया सबसे आसान और व्यापक स्तर पर उपयोग होता हैं जहाँ करोड़ों लोग एक साथ मौजूद होते हैं चाहे वो फेसबुक हो या यूट्यूब। सभी प्लेटफार्म पर फिल्म के कुछ हिस्से शेयर कर दिए जाते है जिससे दर्शकों तक जल्दी और व्यापक स्तर पर उस फिल्म का असर पड़ता है।

Q : छोटी बजट वाली फिल्मों को मार्केटिंग में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

छोटी बजट वाली फिल्मों का पब्लिसिटी बार-बार नहीं कर सकते हैं क्योंकि इसमें समय और पैसा दोनो लगता है। पैसों का बचत करते हुए इन फिल्मों का प्री प्रोडक्शन और प्रोडक्शन किया जाता हैं जिसमे फिल्म के क्वालिटी कम न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। इसी कारण डिजिटल प्लेटफॉर्म एक उचित विकल्प बन जाता हैं प्रचार प्रसार के लिए। जिसका एक उदाहरण हाल ही में रिलीज हुए 'श्रीकांत' मूवी है।

Q : एक फिल्म के लिए टारगेट ऑडियंस को कैसे पहचाना और लक्षित किया जाता है?

फिल्म के लिए दर्शकों को लक्षित नहीं किया जाता है।

वो खुद फिल्म के पोस्टर और ट्रेलर से खींचा चला आता है ठीक लोहे और चुंबक की तरह फिल्मों का प्रचार प्रसार इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Q : रेस 3 जैसी फिल्मे बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप होने के बाद भी अपने बजट से ज्यादा कैसे कमा लेती है?

ये वैसी फिल्मे होती हैं जो अपना लागत तो वसूल लेती हैं पर आपने उम्मीदों पर खड़ी नहीं उतर पाती है। इन फिल्मों से आपने वास्तविक कमाई से कई गुना ज्यादा कमाने की उम्मीद की जाती हैं पर ये नही कमा पाती हैं ऐसी फिल्मों को फ्लॉप फिल्में कहा जाता है। रेस 3 जैसी फिल्म जिसमे सलमान खान जैसे कलाकार हो उससे उम्मीद भी बढ़ जाती है। लेकिन जब वैसी फिल्में चल नही पाती है तो उन्हें डिजास्टर फिल्मे कहा जाता है।

फिल्म के प्रचार प्रसार पर बोले विकास नीरज सिंह

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, हिंदी विभाग मार्गदर्शन कार्यक्रम की झलकियाँ

शिक्षक सहयोगी : प्रो. बिजेन्द्र कुमार , प्रो. शशि रानी
डिज़ाइन परिकल्पना : योगेश , विरेंद्र नोगिया , नीरज कुमार
छात्र सहयोगी : जयदीप दिनकर , करूणा नयन चतुर्वेदी , अरिमर्दन , मोनिका , रीतिका , आलोक सांडिल्य , अंशु कुमार , गोविंद राज , प्रेम चौरसिया

डिस्क्लेमर: ब्राक मीडिया के इस प्रायोगिक समाचार-पत्र में छपी सामग्री लेखक के अपने विचार है, इस सामग्री का संपादकीय टीम से कोई संबंध नहीं है।